परिवार

"एक कविता"

परिवार में सबकों हंसते देख
मन फुले न समाता है,
दादू की जवानी के किस्से सुन मन बहुत रमाता हैं।
दादी का दादू को चिढ़ाना सुन,
मन ठहाके लगाता हैं,
धनी है व मनुष्य जो परिवार के बीच अपना समय बिताता है।
जिस घर में सुनाई दे, बजुर्ग की खांसी,
जिस घर में नज़र आए बजुर्गो की लाठी,
दरवाज़ों पर पड़ी हो बच्चों की चप्पल,
मुस्कुराते दिखाई दे जहां हर शक्ल,
ऐसे घर में लक्ष्मी खुद चल के आती है,
सुख शांती वह धन अनंत बरसाती है,
दादू अगर आधार हैं घर के,
तो दादी आंगन की बगिया हैं।
पापा छत है घर के, तो मम्मी अन्नापूर्णा मैया है।
खिलखिलाते रहे ये सब,
क्योंकि यही मेरी धूप, यहीं मेरी चांदनिया हैं।
बड़ा परिवार होता इंद्रधनुष सा
जितना करो कम पड़ ही जाती इसकी प्रशंसा।
सभी मिलकर गप्पे मारे, तो हो जाती सुबह से शाम,
उसी तरह चुटकी बजाते ही पुरे हो जाते सारे काम,
एक संयुक्त परिवार दिखाता हैं, अनेकता में एकता,
पूरे न हो पाते उनके इरादे, जो भी इनको बुरी नज़र से देखता।
रिश्ते कही हैं इसमें,
हर घर की कहानी हैं।
जश्न है कभी,
तो कभी दुख परेशानी हैं।
सच्चे एहसास व प्रेम की,
यह ऐसी कहानी हैं,
मेरे तुम्हारे और हम सब के परिवार की यही निशानी हैं।
पांचो उंगलिया बराबर न होती,
किसी के भी हाथ की,
दिखे छोटी बड़ी,
काटो तो एक ही जात कि।
पांच पुत्र जिसे दिये प्रभु ने,
उस पिता को ज़रूरत सभी के साथ की,
कमाने निकले थें, घर से दूर,
हम भी होते थें माँ बाप के गुरूर,
न जाने के वक्त कैसे गुज़र गया,
लगा जैसे सूरज ढ़लते ही निकल गया,
मेहनत जमकर की,
पैसों का सुरूर हो गया,
आज याद आई घर की ता समझा,
मैं परिवार से अपना कितना दूर हो गया।
साथ ज़िंदगी का हैं,
थोड़ी देर का नहीं,
माना मंज़िल दूर हैं,
लेकिन, इतनी भी दूर नहीं।
क्षमा, उपकार, सम्मान, सत्कार,
सीखा परिवार से मैने,
पूरा श्रेय किताबों को नहीं,
ममता मां की,
तो फटकार बाबा की।
दुलार दादू का तो,
सीख दादी कि,
पकवान चाची के,
तो कहानियां चाचू की।
किस्सा हो रहा था जन्नत का,
मुझे लगा बात चली हैं मेरे परिवार कि।
बड़ों का आदर व बड़ो का सम्मान,
न करों अनजाने में भी, उनका अपमान।
बड़े बुजुर्गो को अनुभव उम्र का,
आओं सीखे हम उनसे विनम्रता।